सं भो वि /एफ.डी./278-85/56524 न-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एस जिं निर्देश फिनिसिंग मिल्ज प्रा० लि॰, मथुटा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम बती तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीकोगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणां के राज्याल विवाद को न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्राब, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करने हुए, हरियागा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रियसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रियसूचना की धारा 7 के श्रश्रीन गठित अन न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादगर्स्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला स्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मात्र में देने हेनु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवस्थकों तथा, श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री राम वती की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो.वि./एफ.डी./28 4-8 5/505 30.--चूंकि हिंद्याणा के राज्यपाल की राय है कि मैं रोतिया बीकर्स इण्डिया लि॰, 14/2, मथुरा राड, फरीदाबाद के श्रीमक श्री मोहन जा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोहोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यार्यंनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रब, श्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधिसूचना सं: 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं: 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मान में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित नामला है:

नया,श्री मोहन झा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनाक 18 दिसम्बर, 1985 सं भो.वि./एफ.डी./286-85/50962.—चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैं. रोनिया बीकर्स इण्डिया लिठ, 14/2, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सुरेन्द्र चीवरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद हैं ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपान निवाद को न्यांप्रनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विचाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रतान की गई मिलियों का प्रयोग करते हुए हरियाणां के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्वना सं. 5115-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पड़ते हुए अधिस्वना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अब त्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रयन्थकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मासुला है या विवाद से सुसंगत बचना संबंधित मामला है:—

क्या श्री सुरेन्द्र चोश्रंरी की सेश्राश्रों को समापन त्यायोगित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

ग्रीर चूंकि इरिवाणा के राज्यानि क्थिय को न्यायनिर्णा हेतु निर्दिश्य करना बांछनीय समझने हैं;

इसलिए. प्रव. मोबोिक निवाद प्रितिषय, 1947, हो आरा 10 की उत्तारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्याल इस हे द्वारा सरकारी मिबिसूचना सं० 5415—3—अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1963, के साथ पहने हुए प्रिवाद के 11495—वो अन 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7 के प्रयोग पर्वत अर न्यायाना, करोशवाद; को विवादप्रकार पा उसते सुसंगत यो उसते सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानार्थे रागा द्वारा द्वारा मान वेंदेने हेतू निवाद करो है वो कि उत्ताराज हो तथा प्रतिकार के वीव या तो विवादप्रकारामाना है या विवाद से स्मंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

कार श्रो कैन ग प्रनाद शारि हो तेरापों का मोरान न्यायोजिन तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किह राहृत का हकदार है ?